कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (86) खण्ड - {171}

समग्र मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें..........

प्रश्न 1- कभी-कभी कहते हैं बाबा सम्बन्धी सुनते नहीं हैं। बाबा कहते हैं-

A- फिर भी शुभ भावना रखो

B- भक्ति पूरी नहीं हुई

C- ड्रामा में पार्ट नूँधा नहीं है

D- याद की यात्रा में कच्चे हो इसलिए ज्ञान तलवार काम नहीं करती है

प्रश्न 2- तुम बच्चों की लड़ाई है......... से, जिसका सिवाए तुम ब्राह्मणों के और कोई को पता नहीं।

A- स्वयं

B- माया

C- विकारों

D- आसुरी मनुष्य से

प्रश्न 3- अन्दर में यह स्मृति रहनी चाहिए -

A- हम आदि सनातन देवी-देवता धर्म के हैं

B- मैं आत्मा शान्त स्वरूप हूँ

C- हम ईश्वर की सन्तान हैं

D- हम आत्मा भाई भाई हैं

प्रश्न 4- ऊंच ते ऊंच सेवा है -

A- मन्सा

B- सबको बाप का परिचय देना

C- हर आत्मा के लिए शुभ भावना

D- बाप की याद

प्रश्न 5- सुखदाता बाप के बच्चे बनकर भी अगर दुःख की फीलिंग आती है तो बाप कहते बच्चे -

A- ऐसी बातें सुनी अनसुनी कर दो

B- यह तो याद में कम है

C- ज्ञानी बनो

D- यह तुम्हारा बड़ा कर्मभोग है

प्रश्न 6- श्रीकृष्ण का बाप -

A- राजा था

B- श्रीकृष्ण की आत्मा से वह ऊंच पढ़ा हुआ है

C- है जरूर ब्राह्मण,परन्तु पढ़ाई में श्रीकृष्ण से कम है

D- A और C

प्रश्न 7- सही महावाक्य पहचानिए ?

A- ब्राह्मणों का कुल है

B- ब्राह्मणों की भी डिनायस्टी है

C- कौरवों और पाण्डवों का राज्य था

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न 8- आत्मायें सब हैं ?

A- अकालमूर्त हैं

B- अकालतख्त है

C- नॉलेजफुल हैं

D- A और C

प्रश्न 9- सदा हर्षित वा आकर्षण मूर्त बनने के लिए -

A- अलौकिक सेवा में बिजी रहो

B- सब के लिए कल्याण की भावना हो

C- न्यारे और प्यारे रहो

D- संतुष्टमणि बनो

प्रश्न 10- अलग पर्याय का चुनाव कीजिए, शिव बाबा हैं -

A- धर्मराज

B- भगवान

C- एक्टर

D- गोविन्द

प्रश्न 11- आत्मा कि खिड़कियाँ किस को कहेंगे ?

A- आंखों को

B- कान को

C- मन,बुद्धि

D- उपर्युक्त सभी

प्रश्न 12- क्रिमिनल आई है इसकी निशानी क्या होती है ?

A- तीसरा नेत्र बंद होना

B- नजर शरीर पर जाती है।

C- अगर अब तक भी किसी को देखने से विकारी ख्यालात आते हैं तो

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न 13- हद की प्राप्तियों का त्याग भी करना पड़े तो उन्हें छोड़ दो लेकिन -

A- अविनाशी खुशी को कभी नहीं छोड़ो

B- लक्ष्य और मंजिल को सदा स्मृति में रखो

C- गुण मूर्त बनकर गुणों का दान देते चलो

D- पढ़ाई कभी मत छोड़ो

प्रश्न 14- सबसे बड़ी बीमारी कौन सी है, उसकी दवाई डाक्टर्स के पास भी नहीं है ?

A- दुःखी होने की

B- क्रिमिनल आई

C- विकार

D- चिंता

प्रश्न 15- शिवबाबा की याद में न रह कोई काम करते हो तो -

A- माया विध्न रूप बन जाती

B- जमा नहीं होता

C- कर्म विकर्म होते हैं

D- पाप लग जाता है

प्रश्न 16- अभी तुम समझते हो नष्टो-मोहा होना है ?

A- देह और देह के रिश्ते नातों से

B- शरीर से

C- पुराने संस्कारों से

D- सारी दुनिया से

भाग (86) खण्ड {171} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर 1- *D.याद की यात्रा में कच्चे हो इसलिए ज्ञान तलवार काम नहीं करती है*

बाप कहते हैं तुम याद में मस्त रहो तो सर्विस बढ़ती जायेगी। कभी-कभी कहते हैं बाबा सम्बन्धी सुनते नहीं हैं। *बाबा कहते हैं याद की यात्रा में कच्चे हो इसलिए ज्ञान तलवार काम नहीं करती है।* याद की मेहनत करो। यह है गुप्त मेहनत। मुरली चलाना तो प्रत्यक्ष है।

उत्तर 2- *B.माया*

तुम बच्चों की लड़ाई है माया से, जिसका सिवाए तुम ब्राह्मणों के और कोई को पता नहीं। तुम जानते हो हमको इस विश्व पर गुप्त रीति राज्य स्थापन करना है अथवा बाप से वर्सा लेना है। इसको वास्तव में लड़ाई भी नहीं कहेंगे। ड्रामा अनुसार तुम जो सतोप्रधान से तमोप्रधान बने हो सो फिर सतोप्रधान बनना है।

उत्तर 3- *B.मैं आत्मा शान्त स्वरूप हूं*

तुमको तो अपने स्वधर्म में टिकना है और बाप को याद करना है, इसमें भी टाइम लगता है। ऐसे नहीं कि सिर्फ कहने से टिक जाते हैं। *अन्दर में यह स्मृति रहनी चाहिए - मैं आत्मा शान्त स्वरूप हूँ।* हम आत्मा अभी तमोप्रधान पतित बनी हैं। हम आत्मा जब शान्तिधाम में थी तो पवित्र थी, फिर पार्ट बजाते-बजाते तमोप्रधान बनी है।

उत्तर 4- *D.बाप की याद*

तुमको रूहानी सर्विस करनी है। *बाप की याद ही है ऊंच ते ऊंच सेवा।* मन्सा-वाचा-कर्मणा बुद्धि में बाप की याद रहे। मुख से भी ज्ञान की बातें सुनाओ। किसको दु:ख नहीं देना है। कोई अकर्तव्य नहीं करना है। पहली बात अल्फ न समझने से और कुछ भी समझेंगे नहीं।

उत्तर 5- *D.यह तुम्हारा बड़ा कर्म भोग है*

सुखदाता बाप के बच्चे बनकर भी अगर दु:ख की फीलिंग आती है तो बाप कहते - बच्चे, यह तुम्हारा बड़ा कर्मभोग है। जब बाप मिला तो दु:ख की फीलिंग नहीं आनी चाहिए। जो पुराने कर्मभोग हैं उसे योगबल से चुक्तू करो। अगर योगबल नहीं होगा तो मोचरा खाकर चुक्तू करना पड़ेगा।

उत्तर 6- *D. A और C*

श्रीकृष्ण प्रिन्स कहलाया जाता है तो जरूर राजा के पास जन्म हुआ है। श्रीकृष्ण ही सो फिर नारायण बनते हैं। बाकी बाप का नाम ही गुम हो जाता है। *है जरूर ब्राह्मण। परन्तु पढ़ाई में श्रीकृष्ण से कम है।* श्रीकृष्ण की आत्मा की पढ़ाई अपने बाप से ऊंच थी, तब तो इतना नाम होता है।

उत्तर 7- *A.ब्राह्मणों का कुल है*

ब्राह्मणों को आकर बाप पढ़ाते हैं। *ब्राह्मणों की भी डिनायस्टी नहीं है। ब्राह्मणों का कुल है,* डिनायस्टी तब कहा जाए जब राजा-रानी बनें। जैसे सूर्यवंशी डिनायस्टी। तुम ब्राह्मणों में राजा तो बनते नहीं। वह जो कहते हैं कौरवों और पाण्डवों का राज्य था, दोनों रांग हैं। राजाई तो दोनों को नहीं है। प्रजा का प्रजा पर राज्य है, उनको राजधानी नहीं कहेंगे।

उत्तर 8- *A.अकालमूर्त है*

यह (शरीर) सब आत्माओं के रथ हैं। अकालमूर्त का बोलता चलता तख्त है। सिक्ख लोगों ने फिर वह तख्त बना दिया है। उसको अकालतख्त कहते हैं। यह तो अकाल तख्त सब हैं। *आत्मायें सब अकालमूर्त हैं।* ऊंच ते ऊंच भगवान को यह रथ तो चाहिए ना। रथ में प्रवेश हो बैठ नॉलेज देते हैं।

उत्तर 9- *D.संतुष्टमणि बनो*

स्लोगन:- *सदा हर्षित व आकर्षण मूर्त बनने के लिए सन्तुष्टमणी बनो।*

उत्तर 10- *D.गोविन्द*

बलिहारी उस सतगुरू की जिसने गोविन्द श्रीकृष्ण का साक्षात्कार कराया। *गुरू द्वारा तुम गोविन्द बनते हो।* साक्षात्कार से सिर्फ मुख मीठा नहीं होता। मीरा का मुख मीठा हुआ क्या? सचमुच स्वर्ग में तो गई नहीं। वह है

भक्ति मार्ग, उनको स्वर्ग का सुख नहीं कहेंगे। *गोविन्द को सिर्फ देखना नहीं है, ऐसा बनना है।*

उत्तर 11- *A.आंखों को*

जब इन आंखों पर जीत पा लेंगे तब कर्मातीत अवस्था होगी। सारा मदार आंखों पर है, आंखें ही धोखा देती हैं। *आत्मा इन खिड़कियों से देखती है,* इसमें तो डबल आत्मा है। बाप भी इन खिड़कियों से देख रहे हैं। हमारी भी दृष्टि आत्मा पर जाती है।

उत्तर 12- *C.अगर अब तक भी किसी को देखने से विकारी ख्यालात आते हैं तो*

तुम ब्राह्मणों में भी नम्बरवार हैं। कोई राजा-रानी बनते हैं, कोई प्रजा। बाप कहते हैं बच्चे अभी ही तुम्हें दैवीगुण धारण करने हैं। यह आंखें क्रिमिनल हैं, *अभी तक कोई को देखने से विकार की दृष्टि जाती है तो

क्रिमिनल आई है* उनके 84 जन्म नहीं होंगे। वह नर से नारायण बन नहीं सकेंगे।

उत्तर 13- *A.अविनाशी खुशी को कभी नहीं छोड़ो*

ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य है बिना कोई हद के आधार के सदा आन्तरिक खुशी में रहना। जब यह लक्ष्य बदल हद की प्राप्तियों की छोटी-छोटी गलियों में फंस जाते हो तब मंजिल से दूर हो जाते हो। इसलिए कुछ भी हो जाए, *हद की प्राप्तियों का त्याग भी करना पड़े तो उन्हें छोड़ दो लेकिन अविनाशी खुशी को कभी नहीं छोड़ो।*

उत्तर 14- *D.चिंता*

सबसे बड़ी बीमारी है चिंता, इसकी दवाई डाक्टर्स के पास भी नहीं है। चिंता वाले जितना ही प्राप्ति के पीछे दौड़ते हैं उतना प्राप्ति आगे दौड़ लगाती है इसलिए निश्चय के पांव सदा अचल रहें। सदा एक बल एक भरोसा

- यह पांव अचल है तो विजय निश्चित है। निश्चित विजयी सदा ही निश्चिंत हैं।

उत्तर 15- *D.पाप लग जाता है*

बाबा ने समझाया है, बाबा के सम्मुख आते हो तो पहले यह याद करना है कि हम ईश्वर बाप के सम्मुख जाते हैं। शिवबाबा तो निराकार है। उनके सम्मुख हम कैसे जायें। तो उस बाप को याद कर फिर बाप के सम्मुख आना है। तुम जानते हो वह इसमें बैठा हुआ है। यह शरीर तो पतित है। *शिवबाबा की याद में न रह कोई काम करते हो तो पाप लग जाता है।*

उत्तर 16- *D.सारी दुनिया से*

मनुष्यों का शरीर में कितना मोह रहता है! आत्मा शरीर से निकल गई तो बाकी 5 तत्व, उन पर भी कितना लव रहता है। स्त्री पति की चिता पर चढ़ने लिए तैयार हो जाती है। कितना मोह रहता है शरीर में। *अभी तुम

समझते हो नष्टो-मोहा होना है, सारी दुनिया से।* यह शरीर तो खत्म होना है। तो उनसे मोह निकल जाना चाहिए ना।

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (86) खण्ड - {172}

प्रश्न 1- नष्टमोहा की राजधानी -

A- स्वर्ग में

B- परमधाम में

C- द्वापर युग में

D- सतयुग त्रेता में

प्रश्न 2- गीतः-बदल जाए दुनिया न बदलेंगे हम। बच्चों ने यह गीत सुना। किसने सुना ?

A- आत्मा ने

B- ब्राह्मण बच्चों ने

C- आत्मा ने इन शरीर के कानों द्वारा सुना।

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न 3- आत्मा कोई भी अकर्तव्य कार्य न करे -

A- अटेंशन रखना है

B- चैक करना है

C- प्रैक्टिस करनी है

D- नहीं तो 100 गुना दंड पड़ जाएगा

प्रश्न 4 - श्रीकृष्ण जयन्ती पर समझाने का बहुत अच्छा टॉपिक कौन सा है ?

A- श्रीकृष्ण का जन्म सतयुग में

B- श्याम और सुन्दर

C- नारायण को फिर राधे को भी काला क्यों बना दिया

D- शिवलिंग भी काला पत्थर रखते हैं। अब वह काला थोड़े ही है।

प्रश्न 5- जहाँ मेरापन है वहाँ क्या जरूर होगा ?

A- भय

B- फिकर

C- चिंता

D- मोह

प्रश्न 6- किसी को रास्ता नहीं बताया तो गोया -

A- हम अंधे रहे

B- कुछ भी धारणा नहीं है

C- सर्विस है नहीं

D- खुद भी कांटे ही हैं

प्रश्न 7- मुख छोटा बात बड़ी किसके लिए कहते हैं -

A- तुम ब्राह्मणों के लिए

B- श्री कृष्ण के लिए

C- माताओं के लिए

D- किसी के लिए नहीं

प्रश्न 8- कर्मक्षेत्र है ?

A- निराकारी दुनिया

B- साकारी दुनिया

C- आकारी दुनिया

D- B और C

प्रश्न 9- शिव भगवानुवाच, हम........ द्वारा स्वर्ग के द्वार खोल रहे हैं ?

A- इन माताओं के

B- इन ब्राह्मण के

C- इन ब्रह्मा के

D- ब्रह्मा और ब्राह्मणों

प्रश्न 10- अमेरिका के पास कितना सोना है ! यहाँ तो थोड़ा बहुत सोना जो किस के पास है ?

A- बैंकों

B- माताओं

C- साहूकारों

D- सरकार के पास

प्रश्न 11- भारत में खास बहुत यज्ञ करते हैं ?

A- संन्यासी

B- आर्य समाजी

C- सनातनी

D- ब्रह्म ज्ञानी

प्रश्न 12- उदास होते हैं -

A- माया का दास बनने वाले

B- संस्कारों का दास बनने वाले

C- प्रकृति का दास बनने वाले

D- वृत्ति और वायुमंडल के

प्रश्न 13- वहाँ देवताओं को दाढ़ी आदि भी नहीं होती। क्लीनशेव होती है। कैसे मालूम पड़ता मेल है, यह फीमेल है ?

A- बोल से

B- नैन-चैन से

C- पोशाक से

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न 14- क्या भूलना ही सबसे बड़ी भूल है ?

A- अपने घर को

B- आत्मा को

C- अपने स्वधर्म को

D- परमात्मा को

प्रश्न 15- हम आत्मा हैं, न कि शरीर। और जो भी मनुष्य मात्र हैं उन्हों को अपने शरीर के नाम का नशा है क्योंकि -

A- खुद को भूल गए हैं।

B- देह-अभिमानी हैं

C- आत्मा सो परमात्मा, परमात्मा सो आत्मा कह देते

D- आत्माओं को नहीं जानते

प्रश्न 16- अभी तो याद की यात्रा में मस्त रहना है। वह जौहर भरना है जो कोई को भी-

A- प्रश्न पूछने की दरकार ही न रहे

B- बाण लग जाए

C- मुक्ति दे सके

D- दृष्टि से तीर लग जाए

भाग (86) खण्ड {172} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर 1- *A.स्वर्ग में*

मोहजीत राजा की भी कहानी है ना और कोई मोह जीत राजा होता नहीं। यह तो कथायें बहुत बनाई हैं ना। वहाँ अकाले मृत्यु होती नहीं। तो पूछने की भी बात नहीं रहती। इस समय तुमको मोहजीत बनाते हैं। *स्वर्ग में मोह जीत राजायें थे, यथा राजा रानी तथा प्रजा ऐसे हैं।

वह है ही नष्टोमोहा की राजधानी।* रावण राज्य में मोह होता है।

उत्तर 2- *C.आत्मा ने इन शरीर के कानों द्वारा सुना*

बच्चों ने यह गीत सुना। किसने सुना? *आत्मा ने इन शरीर के कानों द्वारा सुना।* बच्चों को भी यह मालूम पड़ा कि आत्मा कितनी छोटी है। वह आत्मा इस शरीर में नहीं है तो शरीर कोई काम का नहीं रहता। कितनी छोटी आत्मा के आधार पर यह कितना बड़ा शरीर चलता है।

उत्तर 3- *C.प्रैक्टिस करनी है*

इस समय तुम बच्चों को बहुत गुह्य बुद्धि मिलती है। आत्मा को ही मिलती है। आत्मा को कितना मीठा बनना चाहिए। सबको सुख देना चाहिए। बाबा कितना मीठा है। आत्माओं को भी बहुत मीठा बनाते हैं। *आत्मा कोई भी अकर्तव्य कार्य न करे - यह प्रैक्टिस करनी है।*

उत्तर 4- *B.श्याम और सुन्दर*

श्रीकृष्ण जयन्ती पर समझाने का बहुत अच्छा है। श्याम और सुन्दर की टॉपिक हो। श्रीकृष्ण को भी काला तो नारायण को फिर राधे को भी काला क्यों बनाते हैं? शिवलिंग भी काला पत्थर रखते हैं। अब वह कोई काला थोड़ेही है। शिव है क्या, और चीज़ क्या बनाते हैं। इन बातों को तुम बच्चे जानते हो। काला क्यों बनाते हैं - तुम इस पर समझा सकेंगे।

उत्तर 5- *A.भय*

आज की दुनिया में धन भी है और भय भी है। जितना धन उतना ही भय में ही खाते, भय में ही सोते हैं। *जहाँ मेरापन है वहाँ भय जरूर होगा।* कोई सोना हिरण भी अगर मेरा है तो भय है। लेकिन यदि मेरा एक शिवबाबा है तो निर्भय बन जायेंगे।

उत्तर 6- *A.हम अंधे रहे*

सर्विसएबुल बच्चों को तो जैसे सर्विस ही सर्विस सूझती रहेगी। समझते हैं *बाबा की सर्विस नहीं की, किसको रास्ता नहीं बताया तो गोया हम अन्धे रहे।* यह समझने की बात है ना। बैज में भी श्रीकृष्ण का चित्र है, इस पर भी तुम समझा सकते हो।

उत्तर 7- *B.श्रीकृष्ण के लिए*

देवताओं के आगे जाकर माथा टेकते हैं। कितनी उनकी महिमा है। सतयुग में सभी के दैवी कैरेक्टर थे, अभी आसुरी कैरेक्टर हैं। ऐसे-ऐसे तुम भाषण करो तो सुनकर बहुत खुश हो जाएं। *मुख छोटा बात बड़ी - यह श्रीकृष्ण के लिए कहते हैं।* अभी तुम कितनी बड़ी बातें सुनते हो, इतना बड़ा बनने के लिए।

उत्तर 8- *B.साकारी दुनिया*

मनुष्य ही कहते हैं हम एक्टर्स पार्टधारी हैं। यह कर्मक्षेत्र है, जहाँ आत्मायें रहती हैं। उनको कर्मक्षेत्र नहीं

कहा जाता। वह तो निराकारी दुनिया है। उसमें कोई खेलपाल नहीं है, एक्ट नहीं। *निराकारी दुनिया से साकारी दुनिया में आते हैं पार्ट बजाने, जो फिर रिपीट होता रहता है।* प्रलय कभी होती ही नहीं।

उत्तर 9- *A.माताओं के*

शिव भगवानुवाच, हम इन माताओं के द्वारा स्वर्ग के द्वार खोल रहे हैं। माताओं पर कलष रखा है। वह फिर सबको ज्ञान अमृत पिलाती हैं। परन्तु तुम्हारा है प्रवृत्ति मार्ग। तुम हो सच्चे-सच्चे ब्राह्मण, तो सबको ज्ञान चिता पर बिठाते हो। अभी तुम बनते हो दैवी सम्प्रदाय। आसुरी सम्प्रदाय अर्थात् रावण राज्य।

उत्तर 10- *B.माताओं के पास*

तुम जानते हो यहाँ के इतने महल माड़ियाँ आदि कोई काम में नहीं आयेंगे। सब खत्म हो जायेंगे। यहाँ क्या रखा है! अमेरिका के पास कितना सोना है! *यहाँ तो

थोड़ा बहुत सोना जो माताओं के पास है,* वह भी लेते रहते हैं क्योंकि उनको तो कर्ज में सोना देना है। तुम्हारे पास वहाँ सोना ही सोना होता है। यहाँ कौड़ियाँ, वहाँ हीरे होंगे।

उत्तर 11- *B.आर्य समाजी*

बाप आकर शूद्र से ब्राह्मण बनाते हैं। यज्ञ में ब्राह्मण जरूर चाहिए। यह है ज्ञान यज्ञ, भारत में यज्ञ बहुत रचते हैं। *इसमें खास आर्य समाजी बहुत यज्ञ करते हैं।* अब यह तो है रूद्र ज्ञान यज्ञ, जिसमें सारी पुरानी दुनिया स्वाहा होनी है। अब बुद्धि से काम लेना पड़ता है। कलियुग में तो बहुत मनुष्य हैं, इतनी सारी पुरानी दुनिया खलास हो जायेगी।

उत्तर 12- *C.प्रकृति का दास बनने वाले*

स्लोगन:- *प्रकृति का दास बनने वाले ही उदास होते हैं,* इसलिए प्रकृतिजीत बनो।

उत्तर 13- *B.नैन-चैन से*

यहाँ तो देखो कैसे-कैसे बच्चे जन्म लेते हैं। कोई की टांग नहीं चलती, कोई जामड़े होते हैं। क्या-क्या हो जाता है। सतयुग में ऐसे थोड़ेही होता है। *वहाँ देवताओं को दाढ़ी आदि भी नहीं होती। क्लीनशेव होती है। नैन-चैन से मालूम पड़ता है यह मेल है, यह फीमेल है।*

उत्तर 14- *C.अपने स्वधर्म को*

कल्प-कल्प तुम घर जाते हो फिर सुख का पार्ट भी बजाते हो। बच्चों को भूल गया है - हम आत्माओं का स्वधर्म है ही शान्त। मीठे बच्चे - *अपने स्वधर्म को भूलना ही सबसे बड़ी भूल है,* अभी तुम्हें अभुल बनना है, अपने घर और राज्य को याद करना है।

उत्तर 15- *B.देह-अभिमानी हैं*

हम आत्मा हैं, न कि शरीर। *और जो भी मनुष्य मात्र हैं उन्हों को अपने शरीर के नाम का नशा है क्योंकि देह-अभिमानी हैं।* हम आत्मा हैं यह जानते ही नहीं। वह तो आत्मा सो परमात्मा, परमात्मा सो आत्मा कह देते हैं। अभी तुमको बाप ने समझाया है तुम आत्मा सो विश्व के मालिक देवी-देवता बन रहे हो।

उत्तर 16- *D.दृष्टि से तीर लग जाए*

तुम बच्चे जानते हो अभी अपनी राजाई स्थापन हो रही है। अभी तो याद की यात्रा में मस्त रहना है। *वह जौहर भरना है जो कोई को भी दृष्टि से तीर लग जाए।* पिछाड़ी में भीष्म पितामह आदि जैसे को तुमने ही ज्ञान के बाण मारे हैं। झट समझ जायेंगे, यह तो सत्य कहते हैं।